Today's Poem – 09.05.2014

बेहद का बाप हमारा बाप भी है, शिक्षक भी है और सतगुरु भी है, वह सर्वव्यापी नहीं हो सकता यह करके बताओ सिद्ध

सतयुग में तुम बच्चे हो जाओगे प्रसिद्द

सारी दुनिया पर इस समय राहू की दशा है

सतयुग-त्रेता में बृहस्पति की दशा है

ईश्वरीय कुल की मर्यादाओं को धारण करना है

अशरीरी बाप जो सुनाते हैं वह अशरीरी होकर सुनने का अभ्यास पक्का करना है

सत्यता को सिद्ध करने की आवश्यकता नहीं रहती

संकल्प, बोल, कर्म और सम्बन्ध-सम्पर्क सबमें दिव्यता की अनुभूति होती

स्व स्वरूप और बाप के सत्य स्वरूप को पहचान

सकाश देने की सेवा करो तो हर मुश्किल हो आसान

मेरा बाबा !!

शुक्रिया बाबा !!

ॐ शान्ति !!!